टायर निर्माण के साथ भारत में शोध भी

नितिन प्रधान, बर्लिन

भारत के टायर बाजार का गणित अब दुनिया की बड़ी टायर कंपनियां भी समझ रही हैं। ट्रक और बस रेडियल टायर बनाने वाली फ्रांस की मिशलिन चेन्नई में लग रहे टायर प्लांट में उत्पादन शुरू होने के बाद अपना रिसर्च सेंटर स्थापित करने के बारे में आगे कदम बढ़ा सकती है। कंपनी की योजना अगले दस साल में पांच नए रिसर्च सेंटर स्थापित करने की है। इनमें भारत भी शामिल है। वैसे कंपनी का फिलहाल जोर भारतीय बाजार में ट्रक और बसों के लिए रेडियल टायर का उत्पादन शुरू करने पर है। कंपनी के ट्रक व बस टायर डिवीजन के प्रमुख पीट सिलेक ने यहां दैनिक जागरण से बातचीत में कहा कि दिसंबर, 2012 में चेन्नई प्लांट में उत्पादन शुरू हो जाएगा। इसकी क्षमता तीन लाख टायर सालाना की होगी। इसके बाद कंपनी को भारतीय बाजार की मांग के अनुरूप रेडियल टायरों का उत्पादन करने में तीन साल का वक्त लगेगा। उसके बाद वर्ष 2015 से संभवतः कंपनी को बस और ट्रकों के रेडियल टायर आयात करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। अभी कंपनी भारतीय बाजारों के लिए अपनी यूरोपीय यूनिटों से टायर आयात करती है। पर्यावरण अनुकूल तकनीकी को बढ़ावा देने के लिए आयोजित 11वें चैलेंज बिबेंडम के दौरान सिलेक ने बताया कि अभी कंपनी भारतीय बाजारों के लिए रिसर्च संबंधी आवश्यकताएं थाइलैंड के बैकाक स्थित रिसर्च सेंटर से पूरा करती है। लेकिन मिशलिन के लिए भारतीय बाजार भी भविष्य में काफी महत्वपूर्ण होने जा रहा है। मौजूदा समय में भारत में बस और ट्रक के टायरों में रेडियल टायरों का हिस्सा मात्र 15 प्रतिशत है। कंपनी की चेन्नई इकाई में पहले चरण में तीन हजार ट्रक रेडियल टायरों का सालाना उत्पादन होगा। इस प्लांट पर कंपनी 4,000 करोड़ रुपये का निवेश कर रही है। वैसे कंपनी पिछले दस साल से भारत में आयातित रेडियल टायर बेच रही है। चूंकि रेडियल टायर दस फीसदी कम ईंधन खर्च करते हैं, लिहाजा कंपनी इनके प्रचार-प्रसार पर भी पूरा जोर दे रही है।

इलेक्ट्रिक कार होगी ऑटो उद्योग का अगला कदम

पारंपरिक ईंधन या कहें पेट्रोलियम उत्पादों पर निर्भरता कम करने के लिए पूरी दुनिया की ऑटो कंपनियां हाइब्रिड कारें विकसित करने में जुट गई हैं। यहां मिशलिन के चैलेंज बिबेंडम में तमाम ऐसी कंपनियां हिस्सा ले रही है, जो इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड कारें विकसित कर रही है। इसे देखकर आसानी से समझा जा सकता है कि आने वाला समय हाइब्रिड और गैर परंपरागत ईंधन वाली कारों का होगा।

इलेक्ट्रिक कारों पर जोर

टोयोटा हो या मर्सिडीज, निसान हो या फिर प्यूजो सभी कंपनियों के इलेक्ट्रिक कार मॉडल अब लोगों को दिखाने के लिए तैयार हैं। पोर्शे ने तो इलेक्ट्रिक स्पोर्ट्स कार तक विकसित कर ली है। लेकिन अभी इन कारों के साथ दिक्कत यही है कि इनकी बैटरी की एक सीमा है। चैलेंज बिबेंडम में मौजूद इलेक्ट्रिक कार मॉडल एक बार की चार्जिंग में अधिकतम 170 किलोमीटर तक जाने में ही सक्षम है। लिहाजा कंपनियां अभी अपने इन मॉडलों को बाजार में उतारने के बजाय बैटरी टेक्नोलॉजी में नई तरक्की का इंतजार कर रही है ताकि ज्यादा माइलेज प्राप्त हो सके।

हाइड्रोजन होगा भविष्य का ईंधन

इलेक्ट्रिक कारों की बैटरी ज्यादा चले इसके लिए भी ऑटो इंजीनियर दिन रात एक किए हुए हैं। मिशलिन का एक ऐसा ही प्रोजेक्ट है फ्यूल सेल का, यानी बैटरी के सेल में हाइड्रोजन का इस्तेमाल होगा, जिससे उसकी क्षमता तीन गुना तक बढ़ जाएगी।

एक्टिव टायर

अगर आपको अपनी कार में सस्पेंशन के लिए अलग से शॉकर लगाने की जरूरत न पड़े तो। जी हां, आने वाले दिनों में ऐसा संभव है। मिशलिन एक ऐसा टायर विकसित करने में जुटी है, जो ईंधन की बचत करेगा और कार के फ्लोर को सपाट रखने में मदद करेगा।